KALA SOPAN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
(A Peer Reviewed Journal)
Volume 01, Issue 01, January 2024
©2024

रामकिकंर बैज की कला यात्रा प्रमुख चित्रों और मूर्तियों के सम्बन्ध मे–एक परिचय

रेखा आर्या

शोधार्थी,ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश

रामकिंकर बैज एक महान व्यक्तिवादी चित्रकार व मूर्तिकार थे आपने शान्ती निकेतन कला भवन में कला परम्परा में एक नये प्रयास का आवाह्न किया व शिल्पाकृतिष्यो में अमूर्त रूपो को ढालने का प्रयास किया और उसमें सफलता प्राप्त की। मेरे इस शोद्य पत्र का शीर्षक ''रामकिंकर बैज की कला यात्रा, प्रमुख चित्रो और मूर्तियो के सम्बन्ध में–एक परिचय'' है मैने इस शोध में रामकिंकर बैज की चित्रण कला व मूर्तिकला का विवरण प्रस्तुत किया है। रामकिंकर बैज प्रमुख मूर्तिशिल्प व चित्र जो आप शान्ती निकेतन के कला भवन की शोभा बढाते है आपके चित्र विभिन्न सग्रहालयो में सरक्षित है 'मिस मधुरा सिंह' राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में संरक्षित है।

'यक्ष–यक्षिणी, की दो विशाल प्रतिमाये नई दिल्ली में इस स्थित रिजर्व बैंक की बिल्डिंग के द्वार पर है, आपके चित्रो की अनेक प्रदर्शिनियां देश विदेश में हुई है। सन् 1947 ई0 इनके चित्रो की एकल प्रदर्शनी दिल्ली में हुयी सन् 1950 ई0 व सन् 1951 ई0 में पेरिस की रियलिटीज नौबलेस के टोक्यो एशियनों कला प्रदर्शनी में चित्र प्रदर्शित हुये। इसके अतिरिक्त ललित कला अकादमी की एक वार्षिक कला प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित किये गये है।

मुख्य शब्दः रामकिकंर बैज, शिल्पाकृतियां, शांतिनिकेतन, यथार्थवाद, कलाकार

प्रस्तावना

कलाकार को यह भूल जाना चाहिए कि वह किस जगह जन्मा है वह क्या है; यह सब भूलकर उसे सबसे पहले अपने आपको समर्पित करना होगा। उस मूल परम्परा के प्रति, जिससे उसने कला सीखी है और उस कला का अर्थ उसके लिए केवल मान या प्रतिमान नही है, उसका अर्थ ध्यान व तथ्य भी है, क्योंकि ध्यान का योग जिसे कलाकार ने सीखा उसने यह भी सीखा है कि सामने मिट्टी नहीं है जिससे हम मूर्ति बना रहे हैं, कलाकार के लिए मिट्टी का रूपान्तरण पहले ही हो चुका है अब वह रूपान्तरित मिट्टी से कुछ निर्मित करने जा रहा है जो एस मिट्टी मे प्राण डालेगा और वह प्राण कलाकार का है, समाज का है, कला का है। कलाकार को इस निश्चय के साथ कलाकारी करनी चाहिए तब जाकर वह

सम्पूर्ण कलाकार बनकर एक सम्पूर्ण कलाकृति का निर्माण करता है। इस स्थिति में आकर जब एक कलाकार रचना करता है तो वस्तुतः वह रचना 'रूपान्तरण' ही होती है, फिर वह कला कृति चाहे मिट्टी की हो या फिर स्याही और कागज की, चाहे रंग और तूलिका के द्वारा बनी हो। रामकिंकर ऐसे ही विरल कलाकारों मे से एक थे जिनको कला ईश्वरीय देन है।

रामकिंकर ने अपनी कला के द्वारा कलाकृति मे प्राण डाले हैं फिर वह सीमेन्ट कंकरीट की मूर्तिशिल्प हो या फिर जलरंग, तैलरंग या टेम्परा रंग प्रविधि हो। वे सभी कलाओं मे सिद्धहस्त कलाकार थे। रामकिंकर बैज चित्रकार की भांति प्रशिक्षित और मूर्तिकार के रूप मे प्रतिष्ठित भारत के ऐसे सफल मूर्तिकार हैं, जिन्होने शिल्पाकृतियों मे अमूर्त रूपों को ढालने का प्रयास किया और उसमे सफलता पायी। भारत के प्रसिद्व कला केन्द्र शांतिनिकेतन से प्रशिक्षित चित्रकार होने के कारण वह मूलतः आकृति मूलक चित्रों के चितेरे रहे और उन्होने इसी रूप मे अपनी कला यात्रा प्रारम्भ की थी। रामकिंकर बैज ने अपना जीवन स्वतन्त्र रूप से कला क्षेत्र मे ही बिताया। आपने 74 वर्ष की आयु मे 2 अगस्त 1980 ई0 को महानगर कलकत्ता मे इस दुनिया से विदा लेकर पंचतत्व मे विलीन हो गये।

उद्देश्य

मेरा यह शोध पत्र रामकिकंर बैज की कला यात्रा उनके प्रमुख चित्रो और मूर्तियों के सम्बन्ध मे एक परिचय है जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है।

1– रामकिंकर बैज के चित्रो का वर्णन व कलात्मकता का वर्णन करना।

2–रामकिंकर बैज के चित्रण मे प्रयोग होने वाले रंग माध्ययम तकनीक व कला शैली का अध्ययन करना है।

3– रामकिंकर बैज ने शांतिनिकेतन मे चल रही कला परम्परा के विपरीत चलकर स्वंय की कला शैली को विश्व कला जगत मे विख्यात किया।

4– मूर्तिकला के क्षेत्र मे रामकिंकर बैज ने किस प्रकार साधारण सी सामग्रीयो व विधि का प्रयोग कर मूर्तिशिल्प मे प्राण डाले है जो कला जगत के लिए एक मुख्य मार्ग है।

5– रामकिंकर बैज ने किस प्रकार अमूर्त रूपो से आगे बढकर कल्पनाजन्य चित्रो का चित्रण किया है

रामकिंकर बैज का जीवन परिचय व प्रारम्भिक कला यात्रा

रामकिंकर की कला अंतर्मुखी और व्यक्तिवादी है जिसका मूलाधार उनके व्यक्तित्व में निहित था। वह केवल एक सफल मूर्तिकार ही नही अपितु एक सफल चित्रकार भी थे। रामकिंकर ने शांतिनिकेतन कला भवन में की कला परम्परा मे एक नये प्रयास का आवहन किया व शिल्पाकृतियों मे अमूर्त रूपों को ढालने का प्रयास किया और उसमें सफलता प्राप्त की। ''उच्च रूप से बढते हुए कल्पना–जन्य एवं वैयक्तिक शैली से प्रेरित उनके मूर्ति शिल्प नवीन कला जगत मे नयी रचना द्वारा गति शक्ति और स्फूर्ति देने के लिए अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

रामकिंकर बैज का जन्म 25 मई 1906 ई0 को पश्चिम बंगाल के एक जिला बाँकुरा के जुग्गीपाडा गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम चंडीचरण एवं माता का नाम संपूर्णा देवी था। पिता पेशे से नाई थे व माता शिव भक्त थी। रामकिंकर बचपन से ही कला प्रतिभा के धनी थे। **''जब वह अपनी माँ के गर्भ मे थे तब एक साधु ने उनकी माँ से कहा था कि ''जो बच्चा आपकी गर्भ में है वह एक दिन विश्वप्रसिद्ध हो जाएगा''**। रामकिंकर की माँ इन्हें कभी राम तो कभी नीलमणि कहकर बुलाती थी। रामकिंकर का कला के प्रति लगाव बचपन से ही था। आपके पिता जब आपको पढना लिखना सिखाते थे तब आपका मन पढने लिखने से ज्यादा रेखा चित्र बनाने मे लगता था। आपकी रूचि पढने लिखने से ज्यादा कला में थी। एक दिन रामकिंकर पढाई के समय चित्र बनाने मे गहराई से तल्लीन थे। उन्हें पिताजी का अपने पास खडे होने का एहसास भी ना हुआ जबकि उनके पिताजी उन्हें बहुत समय से देख रहे थे। जब चित्रण कार्य पूरा हो गया तब पिताजी ने उनका कान पकडा और चिल्लाकर बोले कि **''तुमने अपनी पढाई छोड़ दी है और ये है''**। उस दिन रामकिंकर का कला के प्रति लगाव के लिए यह उनकी आखिरी डाँट

थी।'' इसके बाद उनका लगाव कला के प्रति बढता ही चला गया व दिन प्रतिदिन वह कला के नये नये आयाम सीखने मे लग गये।

''रामकिंकर के घर के पास ही कुम्हारों का इलाका था जहाँ घरों की दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र बने हुये थे। वह चित्र रामकिंकर को बहुत ही आकर्षित किया करते थे, आप वहाँ जाकर उन चित्रो की नकल किया करते थे। इस जगह को रामकिंकर बैज ने अपना प्रथम विद्यालय कहा है।'' रामकिंकर का प्रकृति के प्रति गहरा लगाव था। वह अपने घर के आस पास लगे पेड़ पौधों हरियाली को बहुत पसंद किया करते थे। आपने अपनी प्रारम्भिक चित्रण कला मे खनिज रंगो का प्रयोग किया है व तूलिका भी आप स्वयं बनाते थे। इस तरह बचपन से ही रामकिंकर कला की दुनिया मे सम्मिलित हुए, रामकिंकर मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सन् 1925 ई0 मे शांतिनिकेतन के कला भवन मे कला शिक्षा प्राप्त करने के लिए चले गये। शांतिनिकेतन मे रविन्द्रनाथ टैगोर नन्दलाल बॉस जैसे महान कलाकारों के सानिध्य में रहकर कला शिक्षा ग्रहण की साथ ही साथ रामकिंकर बैज ने मूर्तिकला की शिक्षा उन प्रगतिशील यूरोपीय मूर्तिकारों से प्राप्त की जो कला भवन मे कुछ समय के लिए मूर्तिकला की शिक्षा देने आये थे। रामकिंकर बैज मूर्तिकला की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् गंभीरता के साथ इसी ओर प्रवृत्त हो गये, और अपनी कुशल प्रतिभा का परिचय दिया। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात आप शांतिनिकेतन के कला संकाय के सदस्य बन गये तथा वहाँ मूर्तिकला की शिक्षा प्रदान करने लगे।

रामकिंकर बैज को सन् 1970 ई0 मे भारत सरकार ने पद्म भूषण से सम्मानित किया, सन् 1976 ई0 में आपको ललित कला अकादमी का फेलो बनाया गया, इसके अतिरिक्त सन् 1976 ई0 में ही विश्वभारती द्वारा देशिकोत्तमा से सम्मानित किया गया, तथा सन् 1979 ई0 में एक मानद डी. लिट से रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा समानित किया गया। रामकिंकर बैज को मूर्तिकला के क्षेत्र में पुनरुत्थान का श्रेय दिया जाता है।

रामकिंकर बैज के चित्रों एवं मूर्तिशिल्प का परिचय चित्रण कला

रामकिंकर बैज अंतर्मुखी और व्यक्तिवादी कलाकार थे, वह स्वभाव से उत्साही और आवेशपूर्ण थे। रामकिंकर परम्परा से हटकर चलने वाले ऐसे कलाकार थे जिन्हें शांतिनिकेतन में चल रही किसी भी कला परम्परा ने कभी भी प्रतिबद्ध नहीं कर पाया, उनके इस स्वभाव और व्यक्तित्व से उनकी कला व्यापक रूप से प्रभावित रही है। भारत के प्रसिद्ध कला केन्द्र शांतिनिकेतन से प्रशिक्षित चित्रकार होने के कारण वह मूलतः आकृति – मूलक चित्रों के चितेरे रहे हैं और उन्होंने इसी रूप में अपनी कला यात्रा प्रारम्भ की थी। सन् 1935 ई0 में उनकी कला में एक असामान्य परिवर्तन आया, जिससे इनके सृजन कला में एक नये दौर का आरम्भ हुआ।

रामकिंकर बैज यथार्थ वादी रूपों से आगे बढ़कर अतियथार्थ वादी आकृतियों की और इससे आगे अंततः अमूर्त रूपकारों को अपनी चित्रण कला व मूर्तिशिल्प में शामिल करने लगे। रामकिंकर बैज ने कला सृजन के लिए उन पदार्थों, माध्यमों, तकनीकों तथा प्रक्रियाओं को अपनाया जो उनके स्वभाव के अधिक अनुरूप थे।

रामकिंकर बैज को प्रायः मूर्तिकार के रूप में जाना जाता है, परन्तु वह एक कुशल चित्रकार भी थे। वह मूर्तिशिल्प की रचना करने के साथ ही चित्रों की रचना भी करते थे। इनके कुछ चित्र निम्नलिखित हैं– **'शीतकालीन मैदान', 'मेघों से घिरी संध्या', 'संरचना', 'माँ और बेटी', 'कृष्ण जन्म सन् 1947 ई0', यह तैल रंग चित्र धनवाद से प्रभावित है, 'कुत्ता और बालिका', 'पिकनिक डे सन् 1938 ई0', 'अकाल' यह सन् 1937 ई0 टैम्परा माध्यम है, 'महिला और चित्रकार' यह जलरंग माध्यम में है। सन् 1945 ई0 में, 'गपशप' यह भी जलरंग माध्यम में है, 'शिलोग' जल रंग माध्यम सन् 1947 ई0 'मातृत्व' तैलरंग माध्य में।** रामकिंकर बैज के चित्रों की प्रदर्शनी देश–विदेश में कई बार प्रदर्शित हुई है। सन् 1947 में इनके चित्रों की एकल प्रदर्शनी दिल्ली में हुई, इसके अतिरिक्त ललित कला अकादमी की एक वार्षिक कला प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित किये गये। सन् 1950 व 1951 ई0 में पेरिस की रिएलिटीज नौवलेस के टोक्ये की एशियनों कला प्रदर्शनी में चित्र प्रदर्शित हुए।

मूर्तिकला

रामकिंकर बैज के मूर्तिशिल्पों की कहीं कोई प्रदर्शनी नहीं हुई। इनके मूर्तिशिल्प अधिकतर शांतिनिकेतन में ही संरक्षित हैं। इसका मुख्य कारण मूर्तिशिल्पों का विशाल आकार–प्रकार व भारी–भरकम होना है। दूसरा कारण यह है, कि इन्होंने मूर्तिशिल्पों की रचना किसी प्रकार के पारिश्रमिक व पुरस्कार के उद्देश्य या उन्हें बेंचने के उद्देश्य से नहीं की थी। रामकिंकर के कुछ प्रमुख मूर्तिशिल्प जो विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित है। **'मिस मथुरा सिंह' राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में संरक्षित है। आपके द्वारा बनायी गयी 'टैगोर की आवाक्ष मूर्ति' भारत सरकार द्वारा हंगरी सरकार को भेंट की गयी थी। 'यक्ष–यक्षी की दो विशाल प्रतिमाएं नई दिल्ली में स्थित रिजर्व बैंक की बिल्डिंग के द्वार पर हैं, इसके अतिरिक्त आपके द्वारा बनाये गये अनेक मूर्तिशिल्प शांतिनिकेतन के कला भवन में संरक्षित है जो आज वहाँ की शोभा को बढ़ाते हैं और आने वाले नये कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने हुये हैं।**

आपके द्वारा बने हुये अनेक अनगिनत मूर्तिशिल्प हैं परन्तु यहाँ कुछ प्रमुख मूर्तिशिल्पों का उल्लेख किया गया है। **'कुत्ता', 'लड़की व कुत्ता', 'मिल कॉल– सन् 1954 ई0', 'सुजाता– सन् 1935 ई0', 'संथाल परिवार सन् 1938 ई0', 'लैम्परोड सन् 1941 ई0', 'धान निकासी सन् 1943 ई0',** इनके अतिरिक्त **'दाण्डी मार्च' कांस्य प्रतिमा,** व **'रवीन्द्रनाथ ठाकुर', 'सुभाषचन्द्र बोस', 'अवनीन्द्रनाथ ठाकुर', 'गांगुली महाशय', 'मधुरा सिंह', 'प्रीतिपाडे', विनोदिनी** अदि की प्रतिकृतियों (शबीह) का निर्माण किया है।

1. ''मिल कॉल'' यह एक बहुत ही आकर्षक मूर्तिशिल्प है। यह मूर्तिशिल्प दर्शक को न केवल अपनी ओर आकर्षित करती है अपितु उस अनुभव में भी खीचती है जो इसका प्रतिनिधित्व करती है। इसकी ऊँचाई 292 सेंटीमीटर है और इसका निर्माण सन् 1955–56 ई0 मे रामकिंकर बैज के द्वारा किया गया यह मूर्तिशिल्प शांतिनिकेतन के कला परिसर में स्थित है। यह मूर्तिशिल्प संथाल जाति के लोगों के प्रति प्यारा और उन महिलाओं की जीवंतता और उल्लास को दर्शाता है। इस मूर्तिशिल्प को सीमेन्ट कंकरीट लोहा आदि सामग्री के मिश्रण द्वारा एक ही तकनीक में बनाया गया है।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा

रामकिंकर बैज समय–समय पर अपने चित्रो की प्रदर्शनी भी करते रहते थे वह चित्रों के विषय का चुनाव हमेशा स्वयं ही किया करते थे। रामकिंकर बैज की हमेशा से ही रवीन्द्रनाथ का एक चित्र बनाने की महत्वकांक्षा रही है परन्तु कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर से कहने का साहस नही जुटा पाये। उन्होनं अर्थ–अमूर्त रूप में अपनी कल्पना से रवीन्द्रनाथ के चेहरे को पहले ही पूरा कर लिया था। एक बार रवीन्द्रनाथ अपने जीवन के अन्तिम दिनो के समय में शांतिनिकेतन के भ्रमण पर निकले तब उन्होने रामकिंकर को बुलाया और पूछा 'तुम बहुत सारे चित्र बना रहे हो मेरा चित्र कब बनाओगे' तब रामकिंकर ने रवीन्द्रनाथ के कार्य कक्ष के एक कोने मे अपनी चित्रण सामग्री लेकर बिना किसी औपचारिक बैठक के रवीन्द्रनाथ के चित्र को पूर्ण किया । रामकिंकर बैज ने रवीन्द्रनाथ की एक अवाक्ष मूर्ति का भी निर्माण किया है जिसमे रवीन्द्रनाथ आगे की ओर झुके हुये है यह मूर्तिशिल्प उन्होने अपनी कल्पना से बनाया। यह मूर्तिशिल्प उन्होने किसी अ नुपात सिद्धान्त को लागू किये बिना ही बनाया था।

रामकिंकर किसी भी मूर्तिशिल्प को केवल एक अच्छी शारीरिक समानता मे नही देखते थे अपितु आत्मनिरीक्षण व अपने जीवन के सबसे परिपक्व चरण मे देखते थे जिससे वह मूर्तिशिल्प सदा के लिए कलाकार की याद दिलाता रहे ।

3. रामकिंकर बैज का एक अन्य चित्र **''पिकनिक ''** है। उनका यह चित्र आधुनिक युग मे घनवाद कला की शुरूआत के रूप मे माना जाता है। यह कैनवास पर चित्रित एक तैल चित्र है इस चित्र मे दो वृक्षो के बीच मे तीन युवतियॉ क्रमश; खडी , बैठी और लेटी हुई है। इनमे से एक युवति वायलीन लिये हुये है ऐसा प्रतीत हो रहा है की वह संगीत मे मस्त है। और सूरज की किरणे एक सुनहरा जादू बिखरे रही है। आकृतियो के शरीर सुडौल है। यह चित्र रामकिंकर की चित्रण कला की स्वयं व्याख्या करता है।

4. ''संथाल परिवार'' रामकिंकर बैजे ने यह मूर्तिशिल्प सन् 1938 में सीमेन्ट व कंक्रीट का प्रयोग करके बनाई है इसकी ऊॅचाई 425 से0मी है इस मूर्तिशिल्प में 2 महिलाये जिसमें से एक महिला अपने सिर पर भारी बोझा लिये है तथा एक महिला एक लडकी को डोली में बैठाए हुये है साथ में एक कुत्ता है।

5. रामकिंकर बैज के द्वारा निर्मित प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियो में सबसे प्रसिद्ध **''पार्श्व''** मूर्तिशिल्प है इसके अतिरिक्त इनके द्वारा तैयार एक और प्रसिद्ध मूर्ति **''दोपहर की विश्रान्ति में श्रमिक है''** जो मेहनत करके मजदूरो व किसानो के जीवन को दर्शाती है।

6. रामकिंकर बैज ने बंगाल में सन् 1942 में हुए युद्धो को भारी गहनता से महसूस किया इस युद्ध के कारण जो अकाल बंगाल में पड़ा और उस अकाल में मानवता डगमगा गयी उस घटना को देखा है इसी के रूप में उन्होने विरोधी चित्रो की एक श्रृखला बनाई इसके साथ **''हार्वेस्टर''** नामक उनकी मूर्ति 1943 के कुख्यात बंगाल अकाल की प्रतिक्रिया व्यस्त करती है।

4. मूर्तियों के छोटे नमूने

रामकिंकर बैज बडी–बडी रचनाओं से पूर्व बहुत सारे छोटे–छोटे मूर्तियों के नमूनो तैयार किया करते थे। जैसे एक कलाकार चित्र रचना करने से पूर्व उसका रेखा चित्र बनाकर तैयार करता है। सम्भवत; उसी तरह रामकिंकर ने भी बडे–बडे मूर्तिशिल्प बनाने से पूर्व छोटे–छोटे मॉडल तैयार किये। उदाहरणत; गणेश – 17 सेमी0 ऊॅचा ,एक महिला आकृति 24 सेमी0 ऊॅची मछली – 11 सेमी0 और कुत्ता 113 सेमी0 ऊॅचा है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुखोपाध्याय, अमित. (2007). रामकिंकर बैज बर्थ सेन्चुरी. भुवनेश्वर (खरवेला नगर). ललित कला अकादेमी रिजनल सेन्टर 3/4 खरखेल नगर भुवनेश्वर. पृ. 9–10
2. प्रसाद, देवी. (2007). रामकिंकर बैज स्कल्पचर. नई दिल्ली. तुलिका बुक 35A/1 सहारनपुर जार नई दिल्ली 110049. पृ. 13–25
3. विश्वास, अनामिका. (2006).रामकिंकर बैज हिज लाइफ, टाइम एंव आर्ट गुरूग्राम. पृ. 59–62
4. समकालीन कला, (2006). 28 वॉ अंक, नई दिल्ली. ललित कला अकादेमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001 पृ. 6–8
5. कला दीर्घ. (2006). बंगाल शैली की चित्रकला. नई दिल्ली. पृ. 66–68

बेवसाइट

Ramkinkar Baij - Wikipedia

File:Mill Call by Ramkinkar Baij 07.jpg - Wikimedia Commons